

बन्नेरघट्टा नेशनल पार्क

चर्चा में क्यों?

हाल ही में पर्यावरण और वन मंत्रालय (Ministry of Environment and Forests-MOEF) के इको-सेंसिटिवि ज़ोन (Eco-Sensitive Zone-ESZ) की विशेषज्ञ समिति की 33वीं बैठक आयोजित हुई।

- इसमें बन्नेरघट्टा नेशनल पार्क के कुछ क्षेत्रों को इको-सेंसिटिवि ज़ोन घोषित किया गया।

प्रमुख बिंदु

- हाल में पर्यावरण और वन मंत्रालय की ESZ की विशेषज्ञ समिति की बैठक में 5 नवंबर, 2018 के ड्राफ्ट नोटिफिकेशन के आधार पर बन्नेरघट्टा नेशनल पार्क के आस-पास के लगभग 168.84 वर्ग कमी. क्षेत्र को ESZ क्षेत्र घोषित किया गया।
- 2016 में जारी पहले ड्राफ्ट नोटिफिकेशन से 268.9 वर्ग कमी. का ESZ क्षेत्र चिह्नित किया गया था।
- नए ESZ संरक्षित क्षेत्र की परिधि 100 मीटर (बंगलुरु की ओर) से 1 किलोमीटर (रामनगरम ज़िले) तक होगी।
- ESZ कमेटी के अनुमान के अनुसार, बन्नेरघट्टा नेशनल पार्क में 150 से 200 के बीच हाथी देखे गए।

इको-सेंसिटिवि ज़ोन

- इको-सेंसिटिवि ज़ोन या पारस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संरक्षित क्षेत्र, राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य के आसपास के अधिसूचित क्षेत्र हैं।
- इको-सेंसिटिवि ज़ोन में होने वाली गतिविधियाँ 1986 के पर्यावरण (संरक्षण अधिनियम) के तहत वनियमिती होती हैं और ऐसे क्षेत्रों में प्रदूषणकारी उद्योग लगाने या खनन करने की अनुमति नहीं होती है।
- सामान्य सदिधांतों के अनुसार, इको-सेंसिटिवि ज़ोन का विस्तार किसी संरक्षित क्षेत्र के आसपास 10 कमी. तक के दायरे में हो सकता है। लेकिन संवेदनशील गलियारे, कनेक्टिविटी और पारस्थितिक रूप से महत्वपूर्ण खंडों एवं प्राकृतिक संयोजन के लिये महत्वपूर्ण क्षेत्र होने की स्थिति में 10 कमी. से भी अधिक क्षेत्र को इको-सेंसिटिवि ज़ोन में शामिल किया जा सकता है।
- इको-सेंसिटिवि ज़ोन के लिये घोषित दशा-नरिदेशों के तहत नषिद्धि उद्योगों को राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों के आस-पास के क्षेत्रों में काम करने की अनुमति नहीं है।
- ये दशा-नरिदेश वाणजियिक खनन, जलाने योग्य लकड़ी के वाणजियिक उपयोग और प्रमुख जल-वदियुत परियोजनाओं जैसी गतिविधियों को प्रतर्बिधित करते हैं।
- कुछ गतिविधियाँ जैसे कि पेड़ गिराना, भूजल दोहन, होटल और रसोर्ट्स की स्थापना सहित प्राकृतिक जल संसाधनों का वाणजियिक उपयोग आदि को इन क्षेत्रों में नयित्तिरति किया जाता है।
- इसका मूल उद्देश्य राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों के आसपास की गतिविधियों को नयित्तिरति करना है ताकि संरक्षित क्षेत्रों के नकिटवर्ती संवेदनशील पारस्थितिक तंत्र पर ऐसी गतिविधियों के नकारात्मक प्रभाव को कम किया जा सके।

बन्नेरघट्टा नेशनल पार्क

- कर्नाटक के बंगलुरु में स्थित बन्नेरघट्टा उद्यान की स्थापना 1972 में की गई थी और 1974 में इसे राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया था।
- 2002 में उद्यान के एक हिस्से को जैविक रज़िर्व बना दिया गया जिसे बन्नेरघट्टा जैविक उद्यान कहा जाता है।
- 2006 में देश का पहला ततिली पार्क यहीं स्थापित किया गया।
- यहाँ जंगली बलिलियों, भारतीय तेंदुओं, बाघ, चीतों एवं हाथियों को नैसर्गिक रूप से देखा जा सकता है।
- यह एक चड़ियाघर, पालतू जानवरों का कार्नर, पशु बचाव केंद्र, ततिली पार्क, मछलीघर, सांपघर, मगरमच्छ फॉर्म और सफारी पार्क के साथ ही एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल भी है।
- कर्नाटक का चड़ियाघर प्राधिकरण, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलुरु और अशोक ट्रस्ट फॉर रिसर्च इन इकोलॉजी एंड एन्वायरमेन्ट (ATREE), बंगलुरु इसकी सहयोगी एजेंसियाँ हैं।

[बन्नेरघट्टा पार्क के इको-सेंसिटिवि जोन में कमी](https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/bannerghatta-national-park)

स्रोत - द हट्टि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/bannerghatta-national-park>

